महात्मय भाग 1

मंगलाचरण

प्रेम से बोलिए आनंदकंद भगवान की जय
श्री राधा कृष्ण की जय
श्री सीता राम की जय
श्री उमा पति महादेव की जय
श्री शुकदेव जी महाराज की जय
श्री वेदव्यास की जय

नारायणं नमस्कृत्य नरं चैव नरोत्तमम् ।
देवीं सरस्वतीं व्यासं ततो जयमुदीरयेत् ॥

गुरु-शिष्य परंपरा

गुरु और शिष्य की परंपरा को *नाद परंपरा* कहते हैं और पिता-पुत्र के रूप में जो परंपरा चलती है उसे *बिंदु परंपरा* कहते हैं।
भगवान से ब्रह्मा तक यह ज्ञान *बिंदु परंपरा* से आया। फिर आगे बढ़ते हुए कभी *नाद परंपरा* द्वारा, तो कभी *बिंदु परंपरा* द्वारा प्रवाहित होता गया।

भगवान नारायण ने ब्रह्मा जी को उपदेश दिया। ब्रह्मा जी भगवान के पुत्र स्वरूप हैं क्योंकि उनका प्राकट्य भगवान के नाभिकमल से हुआ।
ब्रह्मा जी का एक और स्वरूप भगवान के नख से प्रकट हुआ जिसे *विखन अवतार* कहा जाता है। इसी विखन से वैखानस आगम की परंपरा प्रकट हुई जिसका पालन आज भी तिरुपति बालाजी, आदि स्थानों पर होता है।

सृष्टि की रचना के समय भगवान ने नाभिकमल से ब्रह्मा जी को प्रकट किया, और वेद का उपदेश भी उन्हें मुख से प्रदान किया।
आगम, तंत्र आदि उपदेश उसी विखन रूप से प्रदान किए गए।

भगवान के उपदेश किसके लिए? (भागवत का प्रमाण)

भगवान ने यह ज्ञान ब्रह्मा जी को दिया।

भागवत महापुराण (ŚB 12.13.19) में कहा गया है:

कस्मै येन विभासितोऽयमतुलो ज्ञानप्रदीपः पुरा ।
तद्रूपेण च नारदाय मुनये कृष्णाय तद्रूपिणा ॥
योगीन्द्राय तदात्मनाथ भगवद्रताय कारुण्यतः ।
तच्छुद्धं विमलं विशोकममृतं सत्यं परं धीमहि ॥ १९ ॥

अर्थात भगवान ने पहले ब्रह्मा को उपदेश दिया, फिर नारद आदि मुनियों को प्रदान किया।

ब्रह्मा, विष्णु और रुद्र—एक ही परमात्मा

भागवत (ŚB 4.7.50) में भगवान स्पष्ट करते हैं:

अहं ब्रह्मा च शर्वश्च जगतः कारणं परम् ।
आत्मेश्वर उपद्रष्टा स्वयं-दृगविशेषणः ॥

तथा—
त्रयाणामेकभावानां योना पश्चाति वैभिधम् ।

अर्थ — ब्रह्मा, विष्णु और रुद्र तीनों में केवल *क्रियात्मक भेद* है, *तत्वात्मक भेद नहीं*।

इसी भाव को श्लोक में कहा गया है:
सृजन-रक्षण-हरणं विश्वस्य दधे संज्ञानं क्रियोचितम् ।

अर्थ — विश्व की सृष्टि करते समय ब्रह्मा का रूप, पालन करते समय विष्णु का रूप और संहार के समय रुद्र का रूप भगवान स्वयं धारण करते हैं।

दक्ष प्रजापति प्रसंग

जब दक्ष प्रजापति का यज्ञ हुआ, तब विष्णु उनकी रक्षा के रूप में प्रकट हुए (क्योंकि उन्होंने विष्णु की पूजा की थी), और अपमानित शिव स्वरूप में भगवान ने वीरभद्र को प्रकट कर विनाश किया।
यह सब भगवान की लीला है।

देव-तुलना का दोष

भगवानों की आपस में तुलना अज्ञान से उत्पन्न होती है।
परिपक्व भक्त कभी भगवान के रूपों की तुलना नहीं करता।

जैसे—
- राजा सूरत ने देवी भगवती की आराधना की।
- ब्रह्मवैवर्त पुराण में वर्णित है कि देवी ने ही उन्हें कृष्ण मंत्र का उपदेश दिया।
इसका अर्थ यह नहीं कि कृष्ण देवी से छोटे हैं।

इसी प्रकार—
- श्रीकृष्ण ने श्यामंतक की खोज में जाम्बवान की गुफा में समय बिताया।
- उसी दौरान घरवाले उनकी सकुशलता हेतु भागवत का अनुष्ठान करते रहे।

इसी प्रकार पुराणों में कभी एक देवता को महान बताया गया है, तो कभी दूसरे को। वस्तुतः सभी रूप परब्रह्म के ही हैं।

देव रहस्य

भगवान श्रीकृष्ण बाणासुर से युद्ध के समय महादेव से भी युद्ध करते हैं।
महादेव ने पराजय स्वीकार की, किंतु यही महादेव स्वरूप श्रीकृष्ण के आराध्य भी हैं।
श्रीकृष्ण ने अनिरुद्ध के विवाहार्थ शिवजी की तपस्या की थी।
इसलिए युद्ध में भी और आराधना में भी एक ही परमात्मा की लीला है।

दरअसल प्रत्येक पुराण अपने-अपने इष्ट की महिमा गाता है।
- शिवपुराण में शिव को ब्रह्म कहा गया।
- विष्णुपुराण में विष्णु को।
- मार्कण्डेयपुराण में देवी को।

सभी का तात्पर्य यही है कि *निराकार परब्रह्म* विभिन्न रूपों में होकर कार्य करता है।

शंकराचार्य का दृष्टिकोण

आदि शंकराचार्यजी ने भी भैरव बाबा को इस प्रकार संबोधित किया है—

भुक्तिमुक्तिदायकं प्रशस्तचारुविग्रहम् ।

अर्थ — जो भक्ति और मुक्ति दोनों प्रदान करते हैं।

तो भगवान की विभूतियों तक हीं यह ज्ञान जाता रहा जैसे ब्रह्मा जी फिर नारद जी फिर वेद व्यास फिर सौनक जी उद्धय जी, आदि(जैसे राम जी ने हनुमान जी को रामभक्तों की सेवा के लिए छोड़ा वैसे हीं उद्धव जी को चिरंजीवी बना कर कृष्ण भक्तों के मार्गदर्शन के लिए छोड़ा), उद्धव जी भी स्वयं भगवद् स्वरूप बताए गए हैं श्रीमद्भागवतम में । अब तक भगवानों के स्वरूपों तक हीं यह ज्ञान गया । यहाँ हमें दो प्रारंपराएँ प्राप्त होती हैं एक तो शेष नाग से जो उद्धव जी तक आई तो उद्धय जी ने यह कथा व्रजनाभ को सुनाई है और सुकदेव जी ने यह कथा परीक्षित को सुनाई है । वेदव्यास तक यह कथा केवल 4 श्लोकों के रूप में थी फिर यह सुत जी ने सौनक जी को सुनाई है । यही कथा सौनक जी ने परीक्षित को इसी रूप में नहीं सुनाई । परीक्षित जी ने सुकदेव जी से जब प्रश्न किया है उससे पहेले अश्वथामा का प्रकरण, परीक्षित का जन्म यह सब तो सुत जी ने सौनक जी को सुनाया । लैकिन वेदव्यास जी ने 18 हज़ार प्रकरणों में पहेले हीन लिख दिया इन सब से पहले ।

अब विद्वानों का मतभेद है कि 18 हज़ार से कुछ कम श्लोक प्राप्त होते हैं 14 हज़ार कुछ प्राप्त होते हैं । कुछ आचार्यों का यह मत है कि 32 अक्चरों में एक श्लोक की पूर्ति हो जाती है, ऐसे कई मतभेद हैं विधवाओं के । भाव यह है कि श्रीमद्भागवतम चाहे एक अक्षर ही क्यों ना हो वह पूर्ण ही है क्योंकि अपूर्ण का व्याख्यान नहीं करता है । यही कारण है कि भगवान श्रीमन नारायण जब ब्रह्म देव को 4 श्लोक बताए तो वह पूर्ण ही बताए और सुत जी ने सौनक़ जी को 18 हज़ार बताया तो पूर्ण ही बताया । परीक्षित को बताया तब यह कथा प्रसिद्धि को प्राप्त हुई । वैसे पहले भी थी भगवान, ऋषियों, मुनियों और संतों के मध्य जैसे शेषनाग के पास, मैत्री के पास, विदुर जी के पास, बृहस्पति जी के पास, उद्धय जी के पास, आदि ।

स्कंदपुराण 2.6.1.2 में बोलते हैं

नैमिषे सूतमासीनमभिवाद्य महामतिम् ।
कथामृतरसास्वादकुशला ऋषयोऽब्रुवन् ॥

नैमिषारण्य में अत्यंत बुद्धिमान सुत जी विराजमान हैं । यह सूत जी वर्ण शंकर सूत नहीं है । अग्निकुंड से उत्पन्न राजा पृथु के यज्ञ से उत्पन्न सूत है जो ब्राह्मण है लेकिन क्योंकि इंद्र और बृहस्पति की समिश्रा आहुति पड़ी थी इनके उद्भव से पहले इसीलिए इन्होंने वर्ण शंकरता का एक उपलक्ष धारण किया और निगम ग्रन्थों का अध्ययन नहीं किया । केवल पुराण इतिहास का ही अध्ययन इन्होंने किया जो व्यास जी ने करवाया । तो इनमें शंकर दोष नहीं है यह विशुद्ध ब्राह्मण हैं । सभी ऋषिगण इनके वक्तृत्व शैली की बड़ी प्रशंसा करते थे । जब उनका जन्म हुआ अग्निकुंड से तब सभी ऋषियों को बड़ा हर्ष हुआ यह भी एक कारण है कि इनका नाम रोमहर्षण था और दूसरा करण यह की

श्रीमद्भगवद गीता के 18 वे अध्याय में भगवान ने भी पूछा था अर्जुन से प्रश्न की अभी तक जितना इन्होंने ज्ञान दिया क्या तुमने समझा और ग्रहण किया?

कच्चिदेतच्छ्रुतं पार्थ त्वयैकाग्रेण चेतसा ।
कच्चिदज्ञानसंमोहः प्रनष्टस्ते धनञ्जय ।।

उसी प्रकार वेदव्यास जी ने भी रोमहर्षण जी से पूछा और एक बार में हीं पढ़ कर इतने एक से समझा दिया वेदव्यास जी को उन्होंने की उनके भी रोमते खड़े हो गए । रोमहर्षण जी सभी ऋषियों के मुख वक्ता थे, कथावाचक थे । ऋषियों ने उनसे 1000 वशों तक यह कथा सुनाने का निवेदन किया । पहेले केवल 3 बीमारी थी, ब्रह्म जी ने केवल 3 बीमारी बनाई थी, (1) भूख (2) प्यास (3) ईर्ष्या । जैसे कैकई जी को हुआ था । ईर्ष्या मानसिक रोग है । बाकी 101 रोगों की चर्चा शास्त्र करते हैं । बाकी 98 रोग प्रिसाद्र और नहुस के यज्ञ में गौ का आरोहण करने से उत्पन्न हुए थे । पशुबली दे रहे थे बहुत ज़्यादा और पशु जब समाप्त हो गए तो गाय ही ला कर काट दिए । तभी 101 रोग हो गए । भगवतपुराण का महात्मय मुख्यतः 3 पुराण में वर्णित है, स्कंद पुराण, पद्म पुराण और कौशिकी संहिता (जो लगभग लुप्तप्राय ग्रंथ है), इन सब की विशेषता यह है कि इनका प्रारम्भ ही अंत से होता है । श्री कृष्ण की कथा का प्रारंभ जब भगवान चले गए वहीं से हुआ है ।

स्कन्द पुराण के महात्मय में :
वज्रम् श्रीमाँत कुरेदेसे स्वपौत्रं हस्तिनापुरे ।
अभिसिच्छ गतं रागी तव कथम् किम च चक्रातुः ।।

भगवान जब जगत छोड़ कर गए हैं तब एक हफ़्ते बाद द्वारिका भी जल में समा गई । युधिष्ठिर जी को बहुत विलम्भ से समाचार प्राप्त हुआ भगवान के जाने का, लगभग 7 माह बाद । कई कहते हैं कि भगवान माघ अमावस्या को इस धरती को छोड़ कर गए हैं और कई कहते हैं भाद्रपद कृष्ण त्रयोदशी के दिन गए । यहाँ कल्पभेद भी हो जाता है ।

खैर 7 महीने बाद जब युधिष्ठिर जी को पता चला तब वे भी परलोक गए धर्मराज के अंश से आए थे, तो

जो जिस जिस देवता के अंश से आए थे वे वहाँ चले गए और महाभगवत में यह लिखा है की जिस दिन कृष्ण जा रहे थे उस दिन हीं उन्होंने पांडवों से बोला और उनके साथ हीं सभी चले गए (शाक्त कल्पों की शृंखला में भगवान कृष्ण के साथ हीं सभी जाते हैं) । और तभी कहते हैं की कलयुग के पहले राजा युधिष्ठिर ही थे (वैष्णव मत के अनुसार) ।
राजा परीक्षित को हस्तिनापुर की गद्दी मिली और वज्रनाभ को इन्द्रप्रश्त की, और संरक्षक बना दिया सुभद्रा जी को और युयुत्सु को ।

परीक्षित जी और व्रंजनाभ जी मिले और उनकी यह हालत देखी नहीं गई मथुरा की और उसके निवारण के लिए उन्होंने शांडिल्य मुनि जी को बुलाया और उन्होंने व्रज भूमि का रहस्य बताया, पहेले यह बताया की इस जगह का नाम व्रज क्यों है?

व्रजनं व्याप्तृतत्त्वात् व्यापनाद् व्रज उच्यते ।

मतलब व्याप्त जो करता है वह व्रज है, कहाँ व्याप्त करता है?

गुणातीतं परं ब्रह्म व्यापकं ब्रज उच्यते।
सदानन्दं परं ज्योति मुक्तानां पदव्ययम्॥

जो गुणातीत (त्रिगुणों से परे), परम ब्रह्म है और सर्वव्यापी है, उसे 'व्रज' कहा जाता है। जो सदा आनन्दमय, परम ज्योति स्वरूप है और मुक्त जीवों का अविनाशी परम पद है। तो ऐसे गुणातीत परमात्मा को व्रज कहा जाता है और यही निराकार परमात्मा जब एक साकार विग्रह धारण कर के आते हैं तो नंदनंदन कहलाते हैं । अब एक शरीर को धारण कर के आयेगा तो उसमे आत्मा तो होनी ही चाहिए । तो आत्मा

स्कंदपुराण 2.6.1.22 में:
आत्मा तु राधिका तस्य तयैव रमणादसौ ।
आत्मारामतया प्राज्ञैः प्रोच्यते गूढवेदिभिः ॥

तो आत्मा राधा हैं, और हम सब कहाँ रमन करते हैं? बाहर ना, बाहर की चीज़ों में लैकिन भगवान अंतर्मुखी हैं वो अंदर रमन करते हैं तभी उनका आत्मा तत्व राधिका के रूप में प्रकट होता है। तो भगवती राधिका प्रभु की आत्मा हैं । तभी प्रभु को आत्माराम कहते हैं क्योंकि, तभी जो विद्वान हैं उन्होंने प्रभु को आत्माराम नाम से संबोधित किया ।

नामों का रहस्य

आजकल कोई भी व्यक्ति कोई भी नाम रख देता है, परंतु प्राचीन काल में निशाचर (असुर) भी नाम गुण देखकर रखते थे। उदाहरण के लिए वृत्रासुर का नाम—'वृत्र' शब्द की व्युत्पत्ति 'वृजन' से है। 'वृजन' का अर्थ होता है कष्ट, पाप या संकट को आवृत्त करना (ढकना या रोकना)। विश्वरूप का वध होने से त्वष्टा को शोक हुआ, इसलिए उन्होंने अपने पुत्र का नाम 'वृत्र' रखा ताकि वह शोक को ढककर उसे शोक से बचा सके। इस प्रकार राक्षस भी नाम अकारण नहीं रखते।
रावण का नाम रावण पड़ा क्योंकि उसके अत्याचार से बहुत रोदन हुआ, सभी रो पड़े।

श्रीकृष्ण नाम का रहस्य

श्रीकृष्ण का नाम कृष्ण क्यों पड़ा?
आकर्षयेत् सर्वान् स्मात् कृष्णः।
यास्मिन् रमते योगिनः सरामः॥

भगवान के नाम के पीछे भी कारण होता है। भगवान के नाम गोविंद, दामोदर और माधव इन तीन नामों पर ही गोपियाँ रुदन करती थीं। जब प्रभु वृंदावन छोड़कर गए, तभी गोपियों ने इन्हीं तीन नामों का स्मरण किया।

दामोदर नाम कब पड़ा?
जब कृष्ण जी को रस्सी से बाँधा गया था—दाम मतलब रस्सी—तो दामोदर नाम पड़ा जब उनके उदर में रस्सी बाँधी गई।

गोविंद नाम
जब इंद्र का घमंड तोड़कर गोवर्धन पर्वत उठाया, तब कामधेनु ने उनका अभिषेक किया और दामोदर नाम पड़ा।

माधव नाम
रासक्रीडा में जब श्रीकृष्ण अपने आप को शौर्यवान और लक्ष्मीपति दिखलाते हैं तो माधव नाम मिला। एक बार लक्ष्मी-नारायण का विवाह हुआ, तब भी माधव नाम पड़ा।

नाम लीला और वेद प्रमाण

भगवान का नाम घटनाओं के बाद पड़ा?
अक्रूर जी ने विष्णु-पुराण में बोला है कि प्रभु का कोई नाम नहीं है, वो तो हम जिस-जिस लीला को देखते गए उसके अनुसार पुकारते गए—नाम हो गया। देखा कि नाभि से कमल निकला तो पद्मनाभ पुकारा। लक्ष्मी जी के स्वामी हैं तो श्री स्वामी हो गए।

यह दृष्टिकोण स्थूल भाव से ठीक है, लेकिन सूक्ष्म भाव से नहीं।
यदि भगवान का नाम किसी घटना पर आधारित होने लगे तो वह घटना देश, काल और परिस्थिति में बंध जाती है।
परंतु भगवान का नाम वेदों में भी मिलता है, बहुत से नाम तो उपनिषदों पर भी हैं—जैसे गोपाल उपनिषद, श्रीराम रहस्य उपनिषद।
तो भगवान का नाम वेद में कैसे?
क्योंकि वेद अनादि हैं—वे प्रारंभहीन हैं।

नामों की लीला वेदोक्त प्रमाण और चरितार्थता

विश्वामित्र जी ने कौशिक रामायण में समाधान किया है कि भगवान के नाम वेदोक्त हैं और वेद की वाणी मिथ्या नहीं है।

भगवान पहले समय और सब कुछ देख कर लीला करते हैं।
वेद में दामोदर नाम कहा गया तो भगवान ऊखल से बंध जाते हैं, नाम सार्थक हो जाता है।

गंगा का नाम भागीरथी इसलिए नहीं है कि भगीरथ जी लेकर आए, स्थूल बुद्धि ऐसा मानती है।
सूक्ष्म बुद्धि यह देखेगी कि श्रुति ने गंगा को भागीरथी कहा है, इसलिए भगीरथ जी सफल हुए।
निष्कर्ष: श्रुति के नाम को चरितार्थ करने के लिए ही भगवान उन-उन लीलाओं में प्रवृत्त होते हैं।

भगवान लवणासुर को स्वयं नहीं मार सकते थे?
शत्रुघ्न जी से ही क्यों मरवाया?
उपनिषद कहते हैं "सत्रुग्णों लवणांतकः" इसलिए शत्रुघ्न जी को भेजा ताकि उनका नाम सार्थक हो। तभी नाम का बहुत महत्व है ।

भगवान की लीला

भगवान की लीला 2 प्रकार की होती है
लीलाहम देहाइतस्य वास्तवी व्यवहारिकी

एक को कहते हैं वास्तवी लीला और एक को कहते हैं व्यावहारिक लीला ।

वास्तवितत सासम विद्या जीवनाम व्यवहारिकी
अद्यान नाम बिनद्वितियाना द्विजीतनन्यागकुचित

वास्तवी लीला इस लोक में नहीं होती है, वो अलग अलग धामों में होती है । वह नित्य है ।

व्यव्योर गोचरे तमतू तल्ली ला व्यवहारिकी ।

भगवान की जो लीला पृथ्वी पर होती है उसे व्यावहारिक लीला कहते हैं । जो वास्तविक लीला है उसके बिना इसका अस्तित्व नहीं होता और वह वास्तविक लीला चिन्मय लोक में होती है ।

तब मुनि ने कहा कि “उन स्थानों पर जहाँ भगवान की लीला हुई है वहाँ मंदिर, आवास स्थान आदि बनवाओ, बगीचे लगवाओ, आदि , तो जब सत्कर्म करोगे तो इससे तुम्हें यह योग्यता प्राप्त हो जाएगी की तुम भगवान की कथा सुन सकते”

और जब उनके कथा के लिए अधिकृत बन जाओगे तब
ततो रहस्यम् मम—तस्मात् प्राप्स्यसि त्वम् सपरिवारः।
तब सपरिवार जा सकोगे (माताओं के साथ, क्योंकि बाक़ी तो मारे गए थे)

तीर्थ में जब इतनी सेवा होगी तब वज्रनाभ उद्धव जी से कथा सुनने के लिए अधिकृत होंगे, परीक्षित जी ने भी इस कार्य में हर रूप से सहायता की । मथुरा में परीक्षित जी ने विद्वान ब्राह्मणों, पराक्रमी क्षत्रियों को, चतुर वैश्य वर्ण के व्यक्तियों को और कुशल शूद्रों को और भगवान के प्रिय वानरों को भी उचित स्थान दिलाया । वज्रनाभ ने 12 मंदिर बनवाये हैं मुख्यतः, 6 बलराम जी के और 6 भगवान कृष्ण के । फिर वे इस उत्कंठा के साथ उद्धव जी की प्रतीक्षा करने लगे कि कथा कब प्राप्त होगी । भगवान कृष्ण की जो

पत्नियाँ थी ज्यादातर वे चिन्मय विग्रह में विलीन हो गई थीं, कुछ जो अष्टावक्र जी के श्राप के साथ आई थीं वे भी तर गईं भेलों के द्वारा और कुछ घर में रह गई थीं । तो जो बची पत्नियाँ थीं उन्हें एक अनुभव यह प्राप्त हुआ कि जो भगवान की 8 प्रधान पटरानियाँ हैं उनमे से एक का नाम कालिंदी है (चौथी), जो सूर्या देव की पुत्री हैं जिनका प्रसिद्ध नाम है यमुना । गंगा, यमुना और सरस्वती तीनो भगवान की पत्नियों के रूप में भी विख्यात हैं । जिसमें गंगा जी कल्पान्तर से भगवान महादेव की भी पत्नी हैं और सरस्वती जी स्वरूपान्तर से ब्रह्मा जी की भी पत्नी हैं । तो भगवती कालिंदी को इन स्त्रियों ने विरह आतुर नहीं देखा तो और पूछ बैठे की क्या कारण है इसका ।

स्कन्द पुराण-
यथा वयं कृष्णपत्न्यस्तथा त्वमपि शोभने ।।
वयं विरहदुःखार्तास्त्वं न कालिन्दि तद्वद ।। ९ ।।
तच्छ्रुत्वा स्मयमाना सा कालिन्दी वाक्यमब्रवीत् ।।
सापत्न्यं वीक्ष्य तत्तासां करुणापरमानसा ।। 2.6.2.१० ।। ।।

तब कालिंदी जी ने बोला

आत्मारामस्य कृष्णस्य ध्रुवमात्मास्ति राधिका ।।
तस्या दास्यप्रभावेण विरहोऽस्मान्न संस्पृशेत् ।। ११ ।।
तस्या एवांशविस्ताराः सर्वाः श्रीकृष्णनायिकाः ।।
नित्यसंभोग एवास्ति तस्याः साम्मुख्ययोगतः ।। १२ ।।

की “भगवान कृष्ण की आत्मा भगवती राधिका हैं और हम उनकी शरण में रहते हैं और हम सभी भी अंश दृष्टि से भगवती राधिका के स्वरूप हैं, जैसे सूर्या एक है और उससे ही हजारों-हजारों किरणे निकलती हैं उसी प्रकार भगवती राधिका को सूर्या और हम किरण हैं ऐसा मान कर चलें और किरण तो सूर्या का हीं अंश है परंतु हम सभी को जब अपने मूल रूप का बोध होगा तो हमें भी अनुभव होगा कि हम भी भगवती राधिका के स्वरूप से युक्त हैं और भगवती राधिका श्री कृष्ण की आत्मा हैं तो स्वयं को भगवती राधिका को समर्पित कर दो, एकांचित हो जाओ तो कोई अंतर नहीं दिखेगा हम सभी में”

युष्माकमपि कृष्णेन विरहो नैव सर्वतः ।।
किन्तु एवं न जानीथ तस्माद्व्याकुलतामिताः ।। १५ ।।

इस रहस्य को वे जानते थे तभी उनके कष्ट नहीं था विरह नहीं था परंतु बाक़ी नहीं जानते थे तो उनको विरह था जो कि इस रहस्य को समझने के बाद समाप्त हो गया । फिर भगवती कालिंदी ने उद्धव जी का स्मरण किया और वे पधारे । उनके आगमन से और भी कुछ गुप्त क्षेत्र प्रकट हुए , ठीक उसी प्रकार जब श्री राम के कीर्तन से हनुमान जी स्वयं आ जाते हैं, वैसे ही श्री कृष्ण के कीर्तन से उद्धव जी स्वयं आ जाते हैं । तब उद्धव जी भी कीर्तन करने के लिए तत्पर हुए । तब वज्रनाभ भी थे (जिन्हें भगवान के दाहिने पद की सेवा का कार्य प्राप्त था (बस वे अपने स्वरूप को भूल गए और इस मनुष्य रूप में भटक रहे हैं)) । जैसे भगवान श्री कृष्णचंद्र कहते हैं हम श्री कृष्ण को और श्री कृष्ण की 16 कलाएँ हैं जैसे चंद्र की 16 कलाएँ होती हैं और एक एक कला में 1000-1000 रश्मियाँ होती हैं उसी प्रकार जब भगवान श्री कृष्णचंद्र की 16 कलाए जब सहस्त्र गुणित होकर प्रकट होती है तब 16 हजार स्त्रियों के रूप में वो दिखने लग जाती है । श्री कृष्ण तो परमात्मा हैं ख़ैर पर वाजद्रानाभ के शरण में रहने वाला व्यक्ति भी इस कष्ट को नहीं प्राप्त

करता है ।

एवं वज्रस्तु राजेन्द्र प्रपन्नभयभञ्जकः ।।
श्रीकृष्णदक्षिणे पादे स्थानमेतस्य वर्तते ।।
अवतारेऽत्र कृष्णेन योगमायाऽति भाविता ।।
तद्बलेनात्मविस्मृत्या सीदन्त्येते न संशयः ।। ८ ।।

तो राजा परीक्षित को रहस्य बताया कि वज्रनाभ भी कोई छोटे मोटी हस्ती नहीं है भक्तों के शरणागत के भय का नाश करने वाले वज्रनाभ भगवान श्री कृष्ण के दाहिने चरण की सेवा का अधिकार रखने वाले पार्षद है लेकिन क्या है ना योग माया के कारण य अपना मूल रूप भूल गए हैं इसीलिए कष्ट में है । अज्ञान का अंडकार जब जीव पर पड़ता है तो वैसे ही वो अपने रूप को भूल जाता है और दुख प्राप्त करता है ।

अष्टाविंशे द्वापरान्ते स्वयमेव यदा हरिः ।।
उत्सारयेन्निजां मायां तत्प्रकाशो भवेत्तदा ।। 2.6.3.१० ।।

जब भगवान श्री कृष्ण साकार विग्रह को धारण कर के 28 के द्वापर अंत में -

स तु कालो व्यतिक्रांतस्तेनेदमपरं शृणु ।।

जब धरा धाम को छोड़ कर गए(125 वर्ष तक जीवन व्यतीत कर के) तब उनके साथ वह ब्रह्म रूपी प्रकाश भी चला गया , तो अब प्रश्न अता है कि अब यह प्रकाश कैसे दूर हो । तो इसका उत्तर -

अन्यदा तत्प्रकाशस्तु श्रीमद्भागवताद्भवेत् ।। ११ ।।
श्रीमद्भागवतं शास्त्रं यत्र भागवतैर्यदा ।।
कीर्त्यते श्रूयते चापि श्रीकृष्णस्तत्र निश्चितम् ।। १२ ।।

अर्थात् वही प्रकाश एक अन्य माध्यम से होगा जिसको कहते हैं श्रीमद्भागवत, अर्थात् भगवतों के द्वारा जब श्री कृष्ण का भागवत कीर्तन किया जाता है , श्रवण किया जाता है, चिंतन किया जाता है तो यह निश्चित है कि वहाँ श्री कृष्ण किसी ना किसी रूप में होते हैं ।

भागवत कौन हैं? भागवत शब्द किनके ऊपर लागू होता है ?
भागवत 11.2 का नव-योगेश्वर–निमि संवाद) के संदर्भ से ही पता चल जाता है कि "**भागवत** कौन है?" — इसका स्पष्ट उत्तर यह है:

भागवत वह है—
1. जो हर कर्म को – शरीर, वाणी, मन, इन्द्रियाँ, बुद्धि, अहंकार और अपने स्वभाव से – केवल भगवान नारायण को समर्पित कर दे।
पंक्ति :
"कायेन वाचा मनसेन्द्रियैर्वा... नारायणायेति समर्पयेत्तत्।"
अर्थ : जो भी करे, "यह भगवान के लिए है" - ऐसी भावना से करे।

2. जिसे भगवान की भक्ति, संसार से वैराग्य और भगवत-ज्ञान - तीनों एक साथ प्राप्त हों।
पंक्ति :
“भक्तिर्विरक्तिर्भगवत्प्रबोध: भवन्ति वै भागवतस्य...”
अर्थ : सच्चे भागवत में भक्ति + वैराग्य + तत्त्वज्ञान — ये तीनों अनिवार्य रूप से होते हैं।

3. जो भगवान के चरणों की नित्य उपासना कर भयमुक्त हो जाए।
पंक्ति :
“अच्युतस्य पादाम्बुजोपासनम्... नित्यम्।”
अर्थ : भगवान का भजना ही उसका जीवन है और वही उसे निर्भय बनाता है।

4. जो संसार में अनासक्त रहकर, सर्वत्र भगवान का रूप देखता है।
पंक्ति :
“आकाश... समुद्र - ये सब श्रीहरि का ही शरीर हैं।”
अर्थ : जगत को भगवान-मय समझने वाला।

5. जो ईश्वर से विमुख नहीं होता, चाहे विपत्तियाँ क्यों न आएँ।
संदर्भ : भगवान स्वयं भक्त को धन-वियोग आदि परीक्षा से तपाते हैं, पर भागवत उनको छोड़ता नहीं।

6. जिसका लक्ष्य केवल परम शान्ति — आत्मस्वरूप की अनुभूति - हो।
पंक्ति :
“तत: परां शान्तिमुपैति साक्षात्।”
अर्थ : भागवत वही है जिसे अंत में आत्मा की सीधी अनुभूति हो।

📌 सार रूप में
भागवत वह व्यक्ति है-
- जो हर कर्म भगवान को समर्पित कर दे,
- नित्य भक्ति करे,
- वैराग्य रखे,
- भगवत-तत्त्व का ज्ञान प्राप्त करे,
- संसार में रहते हुए अनासक्त और परम शान्त रहे,
- और सर्वत्र भगवान को देखे।

यही “सच्चा भागवत पुरुष” है — जैसा इस संदर्भ में कहा गया है।

इसे और विस्तार से 11 वे स्कंद में जानेंगे । ऐसा भी नहीं है कि सम्पूर्ण भागवत के पश्चात आयेंगे भगवान ।

श्रीमद्भागवतं यत्र श्लोकं श्लोकार्द्धमेव च ।। तत्रापि भगवान्कृष्णो बल्लवीभिर्विराजते ।। १३ ।।

जिस क्षण भागवत का उस व्यक्ति ने आधा श्लोक भी उच्चारण कर दिया तो भगवान वहाँ उपस्थित हो जाते हैं (भगवान की 6 ऐश्वरयात्मक शक्तियां, सिद्धिगत 8, कलात्मक 16 शक्तियाँ हैं, अलग अलग दृष्टिकोण से संख्य योग में भी पाच तत्व 10 तत्व 11 तत्व 16 तत्व 24 तत्व 25 तत्व 26 तत्व 36 तत्व से

लेक 96 तत्व तक लोग जाते हैं, यथा दृष्टि तथा सृष्टि (अलग अलग दृष्टि से सृष्टि को अलग अलग रूप में देखते हैं सभी, अलग अलग योनि के हिसाब से) ।

भारते मानवं जन्म प्राप्य भागवतं न यैः ।।
श्रुतं पापपराधीनैरात्मघातस्तु तैः कृतः ।। १४ ।।

शास्त्र में एक सब्द है आत्म हत्या, सामान्यतया संसार में इस शब्द का अर्थ है अप्राकृतिक विधान से अपने शरीर को बलपूर्वक नष्ट कर देना आत्महत्या की सामान्य परिभाषा है ज़हर खा कर , फाँसी लगा कर, चाकू मार कर, नस काट कर, आजकल फैशन चला है नस काटने का तो आत्म हत्यारे की अंतेस्थी का निषेध है । शास्त्र तो नियम बताए हैं और इसका पालन करना बड़ा कठिन है कि जो आत्महत्या करते हैं चाहे किसी भी अवस्था में करें वह दुख कारी ही होता है परिजनों के लिए लेकिन शास्त्र का विधान है कि उसको अंतिम संस्कार के रूप में मुखाग्नि जाता है और चांडाल के माध्यम से पैर में रस्सी बांधकर उसको फेंक देने का विधान शास्त्र कहते है । इसका पालन करना बड़ा कठिन है अगर परिजनों की दृष्टि से देखें तो । अगर शास्त्र की दृष्टि से देखें तो आत्मा की मृत्यु कैसे संभव है जब भगवान ने "न जायते म्रियते वा कदाचि" कह दिया है? तो आत्मा और ब्रह्म शब्द बहुअर्थक है, कहीं कहीं अन्न को भी ब्रह्म कहा गया है शास्त्र तो कहीं देहात्म वाद से है तो कहीं बुद्धात्म वाद से है तो यह देखना पड़ेगा की किस भाव से प्रयोग हुआ है । तो य आत्महत्या शब्द में आत्मा शब्द है देहात्म वाद से है । तो श्री कृष्ण उद्धव जी के माध्यम से यह व्यक्त करते हैं कि पहली तो दुर्लभ बात यह है कि भारत भूमि पर जन्म लेना बड़ा कठिन है जन्म हो भी गया तो उससे भी बड़ा दुर्लभ बात मनुष्य योनि में जन्म लिया भारत में और उससे भी बड़ी दुर्लभ बात की भागवत सुनने को उपलब्ध हुआ (अगर पता चला की अमुक जगह पर वास्तविक रूप से श्री भागवत की कथा हो रही है फिर भी नहीं सुना, तो आत्महत्यारा वही है) । शास्त्र उनके ही कल्याण के लिए यह कहते हैं और जिन्होंने उसका श्रवण किया उनके 3 कूलों का उद्धार हो जाता है । किसी के भी जीवन में अगर सामूहिक बल की दृष्टि से देंगे तो सबसे ज़्यादा गृहस्थ ही हैं, तभी जो केवल शारीरिक तोषण में ही लगा रह गया उसे पशु ही कहा गया है । जैसे मनुष्य गृहस्थ बन भी गया तो उसके लिए संयम और आत्मउद्धार के लिए प्रविष्ट होना शास्त्र उपदेश करते हैं ।

"आहार निद्रा भय मैथुनं च सामान्यमेतत् पशुभिर्नराणाम्। धर्मो हि तेषामधिको विशेषो धर्मेण हीनाः पशुभिः समानाः॥"

यह श्लोक तो नीति वाक्य ही बता देते हैं कि भोजन, नींद, भय और मैथुन (प्रजनन) मनुष्य और पशु दोनों में समान हैं, लेकिन 'धर्म' ही वह विशेष गुण है जो मनुष्य को पशुओं से अलग करता है।

किन तीन कूलों का उद्धार होता है?

पितुर्मातुश्च भार्यायाः कुलपंक्तिः सुतारिता ।। १५ ।।

अपने पिता के कुल का उद्धार, अपने माता के कुल का उद्धार और अपने ससुराल का उद्धार करता है(पत्नी के कुल का) मनुष्य और अगर सकाम दृष्टि से भी देखें तो चारों वर्ण (ब्राह्मण,क्षत्रिय, वैश्य और सुद्र) , स्त्री और पुरुष (लिंग की दृष्टि से) अगर कोई मानसिक विकृति नहीं हुई तो,

विद्याप्रकाशो विप्राणां राजां शत्रुजयो विशाम् ।।

धनं स्वास्थ्यं च शूद्राणां श्रीमद्भागवताद्भवेत् ।। १६ ।।
योषितामपरेषां च सर्ववांछितपूरणम् ।।
अतो भागवतं नित्यं को न सेवेत भाग्यवान् ।। १७ ।।

ब्राह्मणों को भागवत के माध्यम से दिव्य ज्ञान प्राप्त होता है (अज्ञानी ब्राह्मण स्वयं भी नर्क जाता है और 2-4 को ले कर भी जाता है क्योंकि समाज उनके प्रति श्रद्धावान होता है, तभी ऐसे ब्राह्मण को केवल अन्नसत्कार्य कहा गया है, केवल अन्न दे अगर भिक्षा मांगने भी आये तो । ज्ञान विरहित होकर "विष हीनो यथो रगः" जैसे सर्प विष से हीन हो जाता है तो फिर उसका प्रभाव नहीं होता वैसे ही ब्राह्मण ज्ञान से विहीन होकर निष्प्रभाव हो जाता है । जन्म दृष्टि से ब्राह्मण है, पूज्य है, अवध्य है लेकिन जो ब्राह्मणत्व का प्रकाश या प्रभाव प्रतिष्ठित होना चाहिए वो उसमें नहीं होता है ।) तो भागवत का आश्रय लेने वाले ब्राह्मण विशेष ज्ञान से युक्त होते हैं ।

क्षत्रिय विशेष पराक्रम से युक्त होते हैं ।
वैश्य विशेष संपदा से युक्त होते हैं ।
शूद्र विशेष शास्त्र प्रतिष्ठा से युक्त होते हैं ।
स्त्रियाँ भी शास्त्रोचित वांछा को प्राप्त करती हैं ।

सांख्यायन मुनि से से बृहस्पति जी ने भागवत का ज्ञान प्राप्त किया था और बृहस्पति जी से उद्धव जी ने प्राप्त किया है । तो यह भागवत महापुराण का संप्रदाय बताया

सम्यक् प्रकारेण दीयते यत् तत् सम्प्रदायः ।

गुरु के द्वारा सम्यक प्रकार से शिष्य को ज्ञान का उपदेश हो वह संप्रदाय कहलाता है । अब आजकल तो एनजीओ रजिस्टर करा कर संप्रदाय बनाए घूम रहे हैं । जैसे की इतने प्रतिशत की छूट मिलेगी डोनेशन देने से इनकम टैक्स में छूट । एनजीओ बनाकर लोग संप्रदाय चला रहे हैं आजकल उनके लिए- "सम्यक् प्रकारेण" बोला गया है न की विकृत प्रकारेण नहीं बोला गया और "सम्प्रदायते इति सम्प्रदायः, यत् सद्गुरुणा सच्छिष्याय प्रदीयते।" यह भी बोला गया है अर्थात्, उचित गुरु के द्वारा उचित शिष्य को दिया जाए यह ज्ञान (इसका प्रमाण मुण्डकोपनिषद 1.2.12 में भी है), गुरु गड़बड़ हो तो भी दिक्कत और चेला गड़बड़ हो तो भी दिक्कत शास्त्र निष्ठ गुरु के द्वारा समर्पित शिष्य को जो ज्ञान शास्त्र रीति से प्रदान किया जाए वह परंपरा बढ़े तब संप्रदाय कहलाता है नहीं तो गिरोह बन जाएगा । भगवान निष्कल निर्मल परमात्मा के सगुण रूपों में त्रिदेव का वर्णन आया है श्री कृष्ण रूप की प्रधानता से भगवान ने श्रीमद् भागवत का उपदेश अपने ही विष्णु रूप और ब्रह्म रूप और रुद्र रूप को दिया है और अपने अपने लोको में यह देवता भी कथा करते हैं । ब्रह्मा जी सात दिनों में कथा पूरी करते हैं (अपने लोक में), भगवान विष्णु अपने लोक में एक महीने में कथा पूरी और फिर भगवती लक्ष्मी उनको कथा दो महीने में सुनाती हैं और भगवान महादेव एक वर्ष में अपने लोक में कथा पूरी करते हैं । भगवान विष्णु थोड़े कम में करते हैं ब्रह्मा जी और कम में करते हैं और रुद्र जी इतने लंबे समय एक वर्ष तक कथा कहते हैं तो क्या इसका तात्पर्य रुद्र जी ज्यादा ज्ञानी है? क्या ब्रह्मा जी कम ज्ञानी है? ऐसी बात नहीं है ब्रह्मा, विष्णु और रुद्र इन तीनों साकार रूपों में परमात्मा तीन गुणों की प्रधानता दिखाते हैं रजो गुण स्वरूप से ब्रह्मदेव का सत्व गुण स्वरूप से विष्णु भगवान का और तमो गुण की प्रधानता से भगवान रुद्र का स्वरूप दिखाते। ऐसे भगवान रुद्र, भगवान ब्रह्मा और भगवान नारायण गुणा अवस्था में भी वर्णित है लेकिन क्रिया की प्रधानता देखेंगे तो सृजन-रक्षण-हरणं विश्वस्य दधे संज्ञानं क्रियोचितम् के आधार पर एक एक गुण को पकड़ कर बैठे हुए हैं

अलग अलग स्वाररोपों में और अलग अलग गुण के माध्यम से सारी लीला चला रहे हैं । “अधिकारे स्थितो विष्णुर्लक्ष्मीर्निश्चिन्तमानसा” अर्थात् भगवान विष्णु जो है वह एक महीने में कथा सुनाते हैं और भगवती लक्ष्मी दो महीने में वही कथा सुनाती है और यह कथा ऐसा नहीं कि वह स्त्री व्यास पीठ पर बैठ सुना रही हैं बल्कि आपसी सत्संग आत्म का चर्चा है । पति और पत्नी के मध्य जो सत्संग होता है वह उत्तम सत्संग माना जाता है क्योंकि सत्संग पति और पत्नी के बीच में ही बड़ा कठिन है (कि दोनों कम से कम बैठ के भगवान की चर्चा करें क्योंकि सारी चुगली हो जाएगी संसार की लेकिन पति और पत्नी सत्यनारायण कथा बैठकर सुन लें तो बड़ी बात होती है आज तो क्योंकि या तो एक समय दोनों को फुर्सत नहीं होगी या रुचि नहीं होगी या इतना महत्व नहीं देते एक दूसरे को और अवगुण देखते हैं एक दूसरे में क्योंकि यह भी आज दुर्लभ हो चुका है, परंतु गुण देखने से कार्य आगे बढ़ता है, अवगुण तो सबमें है ।